इनके बिना ?

❑ शारदा कुमारी

किसी भी विद्यालय के लिए शिक्षक, विद्यार्थी व अभिभावक यह तीन महत्वपूर्ण घटक हैं । सीखने-सिखाने की प्रक्रिया व विद्यालय के दिन-प्रतिदिन के कार्य-कलापों में तीनों की अन्त: निर्भरता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है । इनके अतिरिक्त विद्यालयी कार्यकलापों के सफलतापूर्वक संचालन में एक चौथा घटक भी है जिसकी भूमिका व योगदान को बहुत कम लोगों ने पहचाना होगा। यह महत्वपूर्ण घटक है मध्यावकाश एवं पूर्ण अवकाश के समय विद्यालय के बाहर रेहड़ी/खोमचे पर खाद्य सामग्री बेचने वाले व्यक्ति । आप अपने स्कूली दिनों को याद करें। तीसरे पीरियड तक आते-आते आपको झड़बेरी, बुढ़िया के बाल या फिर खट्टी-मीठी चूरन की गोलियां व इमली बेचने वाले भईया की याद आने लगती होगी ।

यह खाद्य सामग्री पौष्टिक न सही, परन्तु क्या कोई ऐसा विद्यार्थी होगा जिसका जी न ललचाया हो इन्हें देखकर । परीक्षा परिणामों में अधिकतम से लेकर न्यूनतम अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी, जेब में अठन्नी से लेकर एक रूपया जेब खर्च रखने वाले विद्यार्थी, विद्यालय के मुख्य द्वार पर बिकने वाली रंग-बिरंगी, खट्टी-मीठी गोलियों से चमत्कृत हुए बिना नहीं रहे । खाद्य सामग्री के साथ साथ विक्रेता के प्यार-दुलार और झिड़कियों का रसास्वादन भी किया होगा सबने । इनकी विद्यालयी शिक्षा में क्या उपयोगिता है, क्या इस पर किसी ने गौर किया है ? खाद्य सामग्री बेचने के अतिरिक्त विद्यालयों व विद्यार्थियों से इनका क्या सरोकार हो सकता है ? इस विषय पर न तो किसी नीतिकार या शिक्षाशास्त्री ने विचार किया होगा और न ही विद्यालय प्रमुखों व शिक्षकों ने इन खोमचे वालों की भूमिका पर विचार किया होगा। दिल्ली शहर में बहुत से ऐसे विद्यालय हैं जो प्रात: खुलने से लेकर और बंद होने के बाद भी इन खोमचे वालों की सेवाएं लेते रहते हैं ।

यदि ये खोमचे व रेहड़ी वाले विद्यालयों को अपनी सेवाएं देना बंद कर दें तो संभवतया विद्यालयों में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया बंद ही हो जाये । इसे किसी प्रकार की अतिशयोक्ति न समझें। 'विद्यालय अनुभव कार्यक्रम' के अन्तर्गत मुझे बहुत से विद्यालयों में जाने का अवसर प्राप्त हुआ । सभी विद्यालयों में मुझे शिक्षकों से रेहड़ी/खोमचे वाले ही अधिक सक्रिय नजर आए । प्रस्तुत है सर्वोदय विद्यालय पुष्प विहार के बाहर चूरन, चाट, इमली, फेनी व गोलियों का खोमचा लगाने वाले 'रामरतन' से बातचीत का एक अंश ।

विद्यालय अनुभव कार्यक्रम के अन्तर्गत पर्यवेक्षण हेतु जब मैं विद्यालय पहुंची, मेरा सामना बड़े से बंद गेट से हुआ । गेट पर बड़ा-सा ताला लटका था । शायद ताला यूं ही अटका हुआ हो और उलटने-पुलटने से खुल जाए, यह सोच कर मैंने अंदर हाथ डाला और खोलने का प्रयास किया । इस प्रक्रिया में ताले और गेट की टकराहट से जो ध्वनि उत्पन्न हुई, उससे मेरा काम सरल हो गया । धोती व कुर्ते में लिपटी हुई एक बहुत ही दुबली-पतली सी आकृति मेरे सामने प्रकट हुई । अपने शारीरिक ढांचे के एकदम विपरीत बहुत ही कड़क आवाज में उसने पूछा - ''ऐ बहन, कछु काम है का ?''

''जी हाँ, मुझे स्कूल के अन्दर आना है ।'' मैंने लगभग झुंझलाते हुए कहा ।

''सो तो हम देख ही रहे हैं । मगर काम तो बतावौ, जभी न अंदर आने देंगे ।'' दो टूक उत्तर प्राप्त हुआ ।

उस व्यक्ति के डील-डौल व वेशभूषा से मैंने अनुमान लगाया कि यह यहां का चौकीदार होगा । शायद मेरी बात न समझ पाए। अत: सरल से सरल शब्दों का चयन कर मैंने समझाने का प्रयास किया - ''भईया यहां कुछ लड़कियां आई होंगी पढ़ाने के लिए । उन्ही के सिलसिले में बड़ी मैडम से मिलना है ।''

''ओ हो तो यूं कहो न कि टीचिंग प्रैक्टिस वाली सुपरवाइजर हो । पहले ही बता देती तो घाम में काहे ठाड़े रहती । चलो आवो।'' यह कहकर उसने बड़ी फुर्ती से अपनी धोती से लटकी चाबी निकाली और ताला खोल आदरपूर्वक मुझे अंदर आने की उदारता दिखाई । वह व्यक्ति मुझे विद्यालय प्रमुख के पास ले गया और कमरे के बाहर स्टूल पर बैठी महिला से कड़क आवाज में बोला - ''ऐ पारबती, तनिक ठंडा पानी तो ला, मैडम आई हैं ।'' विद्यालय प्रमुख से अपने प्रशिक्षणार्थियों के उत्तरदायित्वों व समय-सारणी के बारे में चर्चा करके जब मैं लौट रही थी, मैंने देखा वह व्यक्ति बड़ी फुरती के साथ विद्यालय के स्टाफ रूम की ओर जा रहा था । हाथ में चाय की केतली व चार-पांच कप थे ।

अगले दिन मैं विद्यालय प्रात:कालीन सभा आयोजन से पहले ही पहुंच गई । मैंने देखा, वही व्यक्ति विद्यार्थियों की पंक्तियां बनवा रहा था । तीन शिक्षक अपनी ही बातों में मग्न थोड़ी सी दूरी पर खड़े थे । पंक्तियां बनवाने के बाद वह व्यक्ति मुझे नजर नहीं आया । सातवें सत्र में मेरी नजर पुन: उस पर पड़ी । अब वह एक पेड़ के नीचे एक कक्षा को संभाल रहा था। सस्वर कबीर के दोहे सुना रहा था। मैंने आश्चर्य मिश्रित भाव से पूछा - ''भईया, तुम यहां ?'' ''हां बहिनी, पुष्पा मैडम को तनिक काम पड़ गयो। सो वे जल्दी चली गई। बच्चे सिर-फुटौवल न करे सो मैं .....'' उसने बिना किसी हिचक के उत्तर दिया। इस प्रकार मैंने उस व्यक्ति को कभी किसी बच्चे की प्राथमिक चिकित्सा करते देखा, कभी मैडम के रजिस्टरों पर जिल्द चढ़ाते देखा । कभी विज्ञान के प्रयोग की तैयारी में शिक्षक की मदद करते देखा । कभी किसी बीमार बच्चे को घर पहुंचाते देखा। कभी विद्यालय के निरीक्षण से पहले कक्षाओं में चार्ट-पोस्टर आदि टांगते हुए देखा और जो नहीं देख पाई वह था उसका वास्तविक

कार्य अर्थात् विद्यालय के बाहर मूंज की चारपाई बिछाकर उस पर चूरन, फेनी, बुढ़िया के बाल, गोलियां आदि बेचना।

विद्यालय को नि:शुल्क रूप से बहुआयामी सेवाएं प्रदान करने वाले इस व्यक्ति से बात करने को मैं उत्सुक हो उठी

''आप यहां कब से अपनी दुकान लगा रहे हैं ?''

''कोई सोलह-सत्तरह साल तो हो ही लिए होंगे । तब से पहले यहां कोई स्कूल न था । हम बस्ती वालों ने कई बेरी रपट लिखवाई। तब जाके स्कूल खुला ।''

''शुरू में स्कूल क्या इसी रूप में था ?''

''अरे नहीं रे नहीं । शुरू में तो टैन्ट पड़े थे यहां। वे भी एकदम फटे-पुराने और मास्टर थे सिर्फ तीन ठौ । दाखिला तो हम सबने दिला दिया । कोई तीन सौ बच्चे होंगे उस समय । सारा-सारा दिन ऊधम मचाते थे । बड़े दफ्तर में कई बेरी शिकायत की । कुछ न काम बना । मैंने सोचा हमारे ही तो बाल-बच्चे हैं । क्यों न हम ही साज-संभाल करें। टीचर लोगों को चाय-पानी चाहिए । टी-स्टाल लगाया। जब अंदर चाय-पानी ले जाता तो सौ काम और भी हो जाते । कभी बच्चों की टाट-पट्टी झाड़ देता । बड़े साहब का कमरा बुहार देता था। किसी बच्चे को चोट लग जाती तो डिस्पेन्सरी ले जाता।

यहां से पहले मैं मजूरी करता था । सुबह-सुबह ठेकेदार का टैम्पो आ जाता। हम सब उसमें बैठ काम पर जाते । हमारे साथ हमारे बच्चे भी जाते । वे वहीं रेत-गारे में हमारे संग डोलते रहते । मैंने एक दो बेरी बड़े दफ्तर में गुहार लगाई कि हमारी साईट पर कोई चालीस बच्चा होगा पढ़ने की उमर का । तो कोई टीचर भेजो पढ़ाने वास्ते मगर नहीं वे तो यही कहते - पास के स्कूल में डाल दो । अरे भई पास में स्कूल हो तब न । हमने तो ये भी कही कि जो टीचर हमारे बच्चों को पढ़ावेगा उसका रोटी-पानी हमहीं लावेंगे। पर किसी को क्या पड़ी । आपने भी देखा होगा ऐसे बच्चों को । असल में मंतरी जी की कार पर शीशे चढ़े होते हैं न, उन्हें दिखे तो कैसे दिखे।''

''आप इस विद्यालय की पढ़ाई-लिखाई से संतुष्ट हैं ?''

''ये स्कूल क्या और दूसरे स्कूल क्या ? सभी सरकारी स्कूल चौपट हो रहे हैं । समझ लो सरकार गरीबों के सामने एक चुग्गा डाल रही है कि तुम गरीबों के बच्चों का नाम लिखना भर काफी है । इसी स्कूल का हाल देखो । न पानी न लैटरीन । न बच्चों के खेलने कूदने का बन्दोबस्त। जगह तो बहुत है पर झाड़-झंखाड उगा हुआ है । चौकीदार, सफाई वाला, माली सभी हैं पर सरकारी नौकरी है न । इसी से काम करना शान के खिलाफ समझते हैं । हैडमास्टर जी जरा सा टोक दें तो यूनियनबाजी करते हैं । तब हैड साहब मुझे ही कहेंगे - 'देख रामरतन तेरा ही सहारा है ।' उन्हीं की सोच कर कभी मैं यहां का चौकीदार बन जाता हूं । कभी टीचर तो कभी सफाई वाला। यहां के टीचर भी बस ऐसे ही सत्यानाश कर रहे हैं बच्चों का । सुबह आकर हाजिरी लगाऐंगे फिर अपने अपने पिराइवेट धंधों पर चल देंगे। एक टीचर ने तो यहां तक कह दिया - अरे इन्हें क्या पढ़ाना। एनरौलमेंट कम है क्या । ये पढ़ लिख गए तो अपने बच्चे कहां जायेंगे।''

''स्थिति में सुधार कैसे हो सकता है ?''

''देखो, जा तन लागे, ओ ही जाने । एक बेरी सरकार ये कानून बना दे कि हर सरकारी मुलाजिम चाहे अफसर या पल्लेदार, सबके बच्चे सरकारी स्कूल में ही पढ़ेंगे । देखना रातों-रात हालत बदलेंगें । न पानी की किल्लत होगी न टाटपट्टी की और स्कूल में टीचर भी मन से पढ़ायेंगे । अपने बच्चों का नुकसान कौन चाहेगा। अभी तो इन्हें पीड़ा नहीं होती क्योंकि अपने बच्चे तो बढ़िया पिराइवेट स्कूलों में जाते हैं।''

''विद्यालय की खास बात जो आपको पसंद हो ।''

''यहां की तारा मैडम । उन्हीं की बदौलत स्कूल चल रहा है। सबसे पहले आती हैं और आखिर में जाएंगी । कभी कहेंगी - रामरतन, जरा खौलता पानी केतली में लाओ । बच्चों को भाप द्वारा शक्ति दिखानी है । कभी पार्क जाकर न जाने क्या क्या समझाती है बच्चों को । एक बार तो नजफगढ भी ले गई इन्हें दौड़ पर । कोई टीचर राजी नहीं था साथ जाने को । मेरे पास आई - ''देख रामरतन, यह सही नहीं कि हमारे निकम्मेपन की वजह से बच्चे कम्पीटीशन में न जाऐं । बता 14 बच्चों को मैं अकेले बस में कैसे ले जांऊ । तू साथ चले तो मेरी भी हिम्मत बंधे ।'' अब मैं न कैसे कहता। हमारे चार बच्चे दौड़ में पहले नंबर पर आये । धन्य ही हैं तारा मैडम।''

''आप जैसे और भी अभिभाावक है क्या जो विद्यालय को निशुल्क सेवाएं प्रदान करते हैं ?''

''बिल्कुल हैं । कोई-कोई बच्चों को पुरानी कापी किताबें दे जाते हैं । कभी पन्द्रह अगस्त को मिठाई देते हैं । हैडक्वार्टर से अपने टैम्पू पर मिड डे मील ले आते हैं ।''

''कोई संदेश ?''

''भला हम क्या संदेश दें । बस एक प्रार्थना है । सरकार और टीचर व स्कूल के मामले में कुछ ऐसा सुधार करें, काम धंधों का जुगाड़ करें कि हम गांव वालों को शहर भागना ही न पड़े । हमारी हालत तो सुधरेगी । शहर में भी समस्या न रहेगी।''

एक ओर आलीशान इमारतों वाले पब्लिक स्कूलों की चकाचौंध तो दूसरी और टूटे फटे पुराने टैन्टों में चलने वाले विद्यालयों की मायूसी भरी इस नगरी में बहुत से 'रामरतन' हैं जो विद्यालयों के बाहर रेहड़ी/खोमचे लगाकर न केवल अपना परिवार पाल रहे हैं अपितु विद्यालयों को भी अपनी सेवाएं दे रहे हैं । शिक्षा जगत से जुड़े नीतिकारों व अधिकारियों को उनकी सहभागिता की महत्ता को समझना चाहिए और रामरतन ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत करने का जो 'ब्रह्मसूत्र' दिया है, उस पर विचार करना चाहिए।◆